RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

जालन्धर

मूल्य : 2 रु.
वर्ष : 72 अंक : 17
सृष्टि संवत् 1960853116
26 जुलाई 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

वर्ष-72, अंक : 17, 23/26 जुलाई 2015 तदनुसार 11 श्रावण सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आत्मा अहि-पाप का नाश करता है

-ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

तुभ्येदेते मरुतः सुशेवा अर्चन्त्यर्क सुन्वन्त्यन्धः।
अहिमोहानमप आशयानं प्र मायाभिर्मायिनं सक्षदिन्द्रः।।

-ऋ० ५।३०।६

शब्दार्थ-हे इन्द्र-(हे इन्द्र!) एते-ये **सुशेवाः**-अत्यन्त सुखकारी **मरुतः**-प्राण **तुभ्य+इत्**-तेरी ही **अर्चन्ति**-पूजा करते हैं और **अर्कम्**-प्रशंसनीय **अन्धः**-अन्न **सुन्वन्ति**-उत्पन्न करते हैं। **तू इन्द्रः**-सूर्य समान आत्मा **ओहानम्**-सुमार्ग त्यागने वाले **अपः+आशयानम्**-कर्मों में रहने वाले **मायिनम्**-हिंसक स्वभाव वाले **अहिम्**-पाप भाव को **मायाभिः**-बुद्धि से **सक्षत्**-ताड़ देता है।

व्याख्या-मरुत् शब्द का मूल अर्थ है मरने-मारने वाला। लाक्षणिक अर्थ प्राण, ऋत्विक्, सिपाही, वायु आदि अनेक हैं। आत्मा को पाप से युद्ध करना है, उसे सेना चाहिए, वेद कहता है-प्राण ही तेरी सेना है और-

तुभ्येदेते मरुतः सुशेवाः अर्चन्ति।

ये सुखकारी प्राण तेरी ही पूजा करते हैं। प्राण आत्मा की ही सेवा के लिए हैं। प्राण सारी भोग-सामग्री आत्मा के लिए लाते हैं।

'अर्कं सुन्वन्त्यन्धः' प्रशंसनीय अन्नभोग-सामग्री को निष्पन्न करते हैं।

जो कुछ हम खाते-पीते हैं, उसको शरीर का अंश बनने की योग्यता प्राण उत्पन्न करते हैं। इसी भाव को प्रश्नोपनिषत् (दूसरे प्रश्न) में बहुत मनोहारी शब्दों में कहा गया है-

तुभ्यं प्राण प्रजास्त्विमा बलिं हरन्ति यः प्राणैः प्रतितिष्ठसि।।७।।
वयमाद्यस्य दातारः पिता त्वं मातरिश्वनः।।११।।

प्राणाधार आत्मन्! जब तू प्राणों के साथ शरीर में प्रतिष्ठित होता है, तब ये सारी प्रजाएं तेरे लिए भेंट लाती हैं। हम तो भोग के देने हारे हैं, हे जीवनाधार! हमारा पालक पिता तू ही है।

जब तक आत्मा और प्राण मिलकर शरीर में रहते हैं, तभी तक उसे भोग-भेंट मिलती है। प्राणों का साथ छूटने पर प्राण-जड़ प्राण बेकार हो जाते हैं।

पाप-भावना प्रायः मनुष्य के कर्मों में घुसी रहती है। हमारी प्रत्येक चाल में कुचाल होती है। संसार का व्यवहार विचित्र है। प्रायः सभी लोग अहिंसा को मुख्य धर्म मानते हैं, किन्तु मारक सामग्री का संग्रह भी करते हैं। पूछने पर कहते हैं-संसार में शान्ति-स्थापना करने के लिए यह अशान्ति का सामान आवश्यक है। अहिंसा की प्रतिष्ठा के लिए हिंसा अनिवार्य है तो अहिंसा परम धर्म कैसे ? फिर तो **'हिंसा तु परमो धर्मः'** मानना पड़ेगा।

पापभाव मायी है, ठग है, पुण्य का रूप धरके आता है। इसको आत्मा ही मार सकता है-**'अहिमोहानमप आशयानं प्र मायाभिर्मायिनं सक्षदिन्द्रं'**-सुमार्ग छोड़ने वाले, कर्मों में व्यापक, ठग, पाप भाव को बुद्धियों से ताड़ता है।

पाप को हटाने का उपाय योगदर्शन में 'प्रतिपक्षभावना' कहलाता है। **'वितर्कबाधने प्रतिपक्षभावनम्'** (योगदर्शन २।३३) सूत्र के भाष्य में व्यास देव जी लिखते हैं-

''एवमुन्मार्गप्रवणावितर्कज्वरेणातिदीप्तेन बाध्यमानस्तत्प्रतिपक्षान् भावयेत्-घोरेषु संसाराङ्गारेषु पच्यमानेन मया शरणमुपगतः सर्वभूताभयप्रदानेन योगधर्मः स खल्वहं त्यक्त्वा वितर्कान् पुनस्तानाददानस्तुल्यः श्ववृत्तेनेति भावयेत्। यथा श्वावान्तावलेही तथा त्यक्तस्य पुनराददान इति।''

इस प्रकार उल्टे मार्ग की ओर ले जाने वाले अत्यन्त तीव्र वितर्क ज्वर से पीड़ित होता हुआ उसके प्रतिपक्षों का चिन्तन करें। भयंकर संसार के अंगारों में जलते हुए मैंने सब भूतों को अभय प्रदान करने वाले योगधर्म की शरण ली है। उसको छोड़कर उन वितर्कों को फिर ग्रहण करने से 'मेरा कुत्ते का-सा स्वभाव होगा' ऐसा विचारें। जैसे कुत्ता वमन किए पदार्थ को चाटता है, छोड़े हुए को फिर ग्रहण करने वाला भी वैसा ही है।

इस प्रकार हिंसा, असत्य, स्तेय, व्यभिचार, अहंकार, अपवित्रता, असंतोष, विलास, बकवास और नास्तिकता रूपी वितर्कों को लेकर एक-एक के दोषों को सोचे-विचारे। विचार से आचार बनता है। आत्मा का काम है विचारना, अतएव 'मायिनं सक्षदिन्द्रः' कुटिल पाप-भावना को आत्मा ही ताड़ता है।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

thearyasamaj.org

कर्मफल सिद्धान्त

-ले० डा. सुशील वर्मा, गली मास्टर मूल चंद वर्मा फाजिल्का

न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममुमान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत्पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति।।
अर्थव, 12/3/48

अन्वयः अत्र किल्बिषं न। न आधार अस्ति। न यत् मित्रैः सममुमान एति। न एतत् अनूनं पात्रं निहितं। पक्तारं पक्वः पुनः आविशति।

1. अत्र किल्बिषं न- यहां उस परमपिता परमात्मा की न्याय व्यवस्था में कोई दोष अथवा त्रुटि नहीं।

2. न आधारः अस्ति- न ही कोई सहारा है अथवा न ही कोई सिफारिश है।

3. न यत् मित्रैः सममुमान एति- न ही कोई उपाय है जिससे मित्रों के साथ चल कर पहुंचा जा सके।

4. न एतत् अनूनं पात्रं निहितं- हमारे द्वारा कर्मों से कमाया हुआ यह पात्र पूरे का पूरा है जिसमें कुछ घटना अथवा बढ़ा नहीं। ऐसा वह पात्र पूर्णरूपेण सुरक्षित रखा हुआ है।

5. पक्तारं पक्वः पुनः आ विशाति- पकाने वाले को पकी हुई वस्तु फिर से भली प्रकार मिल जाती है।

अथर्ववेद का यह मंत्र कर्म फल को पूर्णतया प्रतिपादित करता है। गीता का जब यह प्रसिद्ध श्लोक पढ़ते हैं

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन -गीता 2/47

तो यह स्पष्ट हो जाता है कि हमारा कर्म करने का अधिकार है फल के विषय में सोचने की आवश्यकता नहीं है परन्तु मनुष्य तो ऐसा प्राणी है जो प्रत्येक कार्य उसके फल प्राप्ति अनुसार ही करता है। एक शंका बनी रहती है कि इस कार्य का परिणाम कैसा रहेगा? यही प्रश्न उसके लिये कार्य का हेतु है। प्रत्युत्तर में वेद का यह पावन मंत्र उसे विश्वास दिलाता है कि तेरा किया हुआ कर्म यूं ही व्यर्थ नहीं जायेगा। अवश्यमेव इस का परिणाम तुम्हें प्राप्त होगा।

इस प्रस्तुत मंत्र ने तो पूरी की पूरी गुत्थी ही खोल कर रख दी कि मनुष्य द्वारा किया गया कर्म उसके परिणाम को स्वतः ही प्रकट कर देता है। मंत्र का एक एक पद उस द्वारा किये कर्म के आशंकित परिणाम की पूरी व्याख्या कर रहा है। क्योंकि वह परमात्मा न्यायकारी है। उसकी न्याय व्यवस्था में लेश मात्र भी त्रुटि नहीं। हम ही हैं जो अज्ञानता के कारण उसे कोसते रहते हैं। अपने दोषों को उस पर ही मढ़ देते हैं। हर बुरे परिणाम के लिये उसे जिम्मेवार ठहराते हैं और अच्छे का श्रेय स्वयं के लिये चुनते हैं। मानों कि हर बुरे काम के लिये उसे ही निर्धारित किया गया है। ज्ञातव्य है कि परमात्मा के पास केवल मात्र सुख ही सुख है। वह सुख प्रदाता है दुख तो हमारे ही कर्मों का फल है।

स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः। अथर्व 10/23/1

वेद का तो आदेश है कि लोक में सुख और शांति तथा परलोक में निःश्रेयस श्रेष्ठतम कर्मों से ही प्राप्त हो सकते हैं अन्यथा नहीं। यदि हमारा उस परमसत्ता पर पूर्णतया विश्वास है, श्रद्धा है, निष्ठा है, दृढ़ निश्चय है, उसकी न्याय व्यवस्था में आस्था है। महाभारत के कथन को उचित एवं न्यायसगत मानते हैं कि अवश्यमेव भोक्तव्यम् कृतं कर्म शुभाशुभम् तब हमें निम्नलिखित लाभ प्राप्त होंगे।

संकट में व्यथारहित होनाः- परमात्मा के न्याय को स्वीकार्य मानते हुये यह निश्चय रहेगा कि जो कष्ट मेरे ऊपर आए हैं वे मेरे ही दुष्कर्मों का फल है। मैं इसे भोग कर ही कष्टों से छुटकारा पाऊंगा। परिणामतः मनुष्य व्यथारहित होकर उन संकटों को सहने का सामर्थ्य प्राप्त करता है।

दृढ़ विश्वासी- डर से तब तक नहीं डरना चाहिये जब तक वह आ न जाए। मरने से पहले ही क्यों मरा जाये। इस मंत्र के समझ में आ जाने पर तो यह दृढ़ विश्वास हो जाता है कि परमात्मा की न्याय व्यवस्था बहुत ही सुस्पष्ट एवं सुव्यवस्थित है। हमारे कर्मों का फल अवश्यमेव हमें भुगतना होगा। यहां पर यदि चाणक्य को याद करेंगे तो वही उपदेश प्राप्त होगा।

यथाधेनुसहस्रेषु वत्सो गच्छति मातरम्।
तथा यच्च कृतं कर्म कर्त्तारमनुगच्छति।।
-चाणक्य नीति 13/4

हमें विश्वास हो जाता है कि जो हमें मिलता है वह अपने कर्मों के आधार पर ही मिलता है। फिर यह कहां की ईमानदारी है कि प्रभु से सुख समृद्धि की ही प्रार्थना करें। प्रार्थना तो यह करनी चाहिये कि मुझ से अज्ञान और दुर्बलता वश जो पाप हुआ है, मैं उसका फला तुझ से मांगता हूं ताकि मेरा वह बोझ शीघ्र उतर जाए। इस प्रकार दुख से निर्भय रहने का लाभ प्राप्त होगा।

दुष्कर्मों का परित्याग- उपरोक्त विचार से दुष्कर्मों के परित्याग की भावना जागृत होगी। क्योंकि संसार के समस्त पाप सुख प्राप्ति के लिये ही किये जाते हैं, दुःख के लिये नहीं। इस प्रकार दुष्कर्मों को त्याग कर पापों से मुक्ति मिलेगी। वैसे भी जीवन का लक्ष्य मुक्ति ही है जिसके लिये शुभ कर्म ही एक मात्र रास्ता है। वही सुपथ है जिसके लिये हमने अग्रसर होना है। अन्ततः हम सभी इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वह परमात्मा न्यायकारी है और उसकी न्याय व्यवस्था में कोई भी त्रुटि नहीं है। उसके यहां कोई सिफारिश नहीं चलती। उसके न्यायकर्म में किसी पीर पैगम्बर, गुरु तथाकथित बावाओं की सिफारिश की कोई गुंजाइश नहीं है। इस तथ्य को केवल मात्र वेद ही कह सकता है। न तो ईसाइयत ही इसे कह सकती है, न ही इस्लाम और तो और पौराणिक पद्धति में भी इतना साहस नहीं क्योंकि उनका तो मानना है कि ईसा मसीह के सामने गुनाह स्वीकार कर लो, कलमें पढ़ लो, प्रार्थना से, तीर्थ स्थानों में स्नान करने से शरीर को कष्ट देने वाली क्रियाओं में पापों से छुटकारा मिल जायेगा। यही प्रवृत्ति उन्हें नई बुराई करने की ओर धकेल देती है क्योंकि पुराने पाप तो उन्होंने माफ करवा ही लिये।

फलं धर्मस्य चेच्छन्ति धर्म नेच्छन्ति मानवाः।
फलं पापस्य नेच्छन्ति पापं कुर्वन्ति यत्नतः।।

प्रायः मानव धर्म फल अथवा सुख की इच्छा तो करते हैं किन्तु धर्म का आचरण कोई नहीं करना चाहता। इसी प्रकार पाप फल अर्थात् दुख को कोई नहीं चाहता किन्तु पाप पूरी शक्ति से करता है क्योंकि पहले के पापों के छुटकारे के प्रति वे आश्वस्त कर दिये गये होते हैं।

दूसरे चरण में कहा गया कि आप के साथ कोई मित्र अथवा सम्बन्धी आप के कर्म फल में साथ नहीं देगा। यहां यह स्पष्ट है कि किसी भी दूसरे का कार्य अथवा किया हुआ कर्म आपके काम न आ सकेगा। यह भ्रान्ति मध्यकाल में बहुत प्रबल रही, अभी भी यह विश्वास कम तो नहीं हुआ। दूसरों से विघ्न निवारण व दुख दूर करने हेतु जप करवाए जाते हैं, माला फिरवाई जाती है। तीर्थ यात्रा कोई अन्य कर आए बस केवल मात्र उसके हाथ लगा दो, उसके चरणों को स्पर्श कर दो, तुम्हें फल प्राप्त हो जायेगा। कैसे कैसे उपाय बताये जाते हैं। मृत्यु पर भी विजय प्राप्ति के लिये अच्छे स्वास्थ्य की कामना के लिये महामृत्युञ्जय जाप किये जाते हैं। विडम्बना तो इस बात की है कि हमारे आर्य समाजों में भी स्वास्थ्य लाभ के नाम पर 21, 31, 51 अथवा 101 बार मृत्युञ्जय मंत्र का जाप किये जाते हैं। आहुतियां दिलवाई जाती हैं। इस अवैदिक कर्म के खंडन के लिये नहीं अपितु उस का मंडन किया जाता है। तर्क यह दिया जाता है कि यह भी वेद मंत्र है इसलिये इस मंत्र में आहुतियां देने में क्या गलत है। स्वामी दयानन्द जी ने तो इस मंत्र का न तो कोई महात्म्य प्रकट किया और न ही किसी यज्ञ में , न ही किसी संस्कार में इसे सम्मिलित किया, न ही इससे किसी जप की चर्चा की।

आओ वेद के आदेश को स्वीकार करें और उसके न्याय कर्म के अनुसार बुरे कर्मों को त्याग अच्छे कर्मों की ओर अग्रसर होवें। आप ही एक मात्र प्राणी हैं जिसे अपने कर्मों का फल प्राप्त होगा।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

सम्पादकीय......

नशामुक्त समाज से ही राष्ट्र का उत्थान सम्भव

राष्ट्र निर्माण का प्रथम साधन है- चरित्र बल। जिस प्रकार शरीर को संभालने के लिए रीढ़ की हड्डी आवश्यक है उसी प्रकार राष्ट्र रूपी शरीर को संभालने के लिए चरित्र बल रूपी मेरू दण्ड आवश्यक है। बंगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय के इस कथन से प्रेरणा लेनी चाहिए कि-समाज में प्रचलित विधि विधानों के उल्लंघन का दुःख चरित्र बल और विवेक बुद्धि के बल पर ही दूर किया जा सकता है। आकर्षक प्रलोभन के आगे मन फिसल जाता है, परन्तु चरित्रवान उन्हें ठुकरा देता है। वासनाओं के तूफान के आगे दुर्बल मन उड़ जाता है, परन्तु चरित्रवान इन तूफानों के बीच में भी अड़िग रहता है। उमड़ती हुई शक्ति के सागर को देखकर दुर्बल मन झुक जाता है, किन्तु चरित्रवान साहस के साथ अन्याय का मुकाबला करता है। युवक में व्यक्तिगत चरित्र की पवित्रता पैदा करनी पड़ेगी और इस चरित्रबल को राष्ट्र कल्याण की दिशा में मोड़ना पड़ेगा। यदि हम लोग इस प्रकार का चरित्र युवकों में पैदा कर सके तो देश की सर्वोत्तम सेवा होगी।

आज समाज में नशे के फैलने से युवा वर्ग इसमें बुरी तरह फंस चुका है। नशे की दलदल में फंसकर युवा शक्ति अपने भविष्य को बर्बाद कर रही है। जिस युवा शक्ति को राष्ट्र के भविष्य निर्माण में अपना योगदान होना चाहिए वही युवा वर्ग आज लक्ष्य से हीन होकर अपने भविष्य से खिलवाड़ कर रहे हैं। नशे की चपेट में आकर हमारा देश निराशा के गर्त में डूबता जा रहा है। आज के स्वार्थी नेता अपने स्वार्थ के लिए युवा शक्ति का दोहन करके उन्हें नशे की दलदल में धकेल देते हैं। नशे के विरूद्ध लड़ने के लिए आज बहुत बड़े आन्दोलन की आवश्यकता है। इसके लिए युवा शक्ति को जगाना होगा। उन्हें उनके कर्त्तव्य का बोध कराना होगा। नशे को जड़ से खत्म करने के लिए हमें सरकार से भी सहयोग लेना चाहिए। जो पार्टी नशा उन्मूलन में सहायता देगी उसी को हम अपना जन समर्थन दें ताकि राष्ट्र के भविष्य को बचाया जा सके। आज का युवा वर्ग आने वाले राष्ट्र का भविष्य है। अगर हम इस युवा पीढ़ी को चरित्रवान बना दें और नशे से मुक्त कर दें तो राष्ट्र का भविष्य संवर सकता है।

राष्ट्र का निर्माण नवयुवकों की भीड़ से नहीं हुआ करता है। राष्ट्र के निर्माण के लिए ऐसे लोगों की जरूरत पड़ती है जिनके जीवन में यौवन शक्ति का प्रवाह हो परन्तु साथ ही विवेक की मशाल भी जलती रहे। यदि जीवन में विवेक की मशाल नहीं जलती है तो तरूणाई राष्ट्र के लिए संकट बनकर खड़ी हो जाती है। इस यौवन के वरदान के प्रसंग में उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द का यह वचन सदा प्रेरणा देता रहेगा जवानी जोश है, बल है, साहस है, दया है, आत्मविश्वास है, गौरव है वह सब कुछ है जो जीवन को पवित्र, उज्जवल और पवित्र बना देता है। आज राष्ट्र का गौरव बढ़े, इसके लिए हमें युवकों को चरित्रवान बनाना होगा। आज राष्ट्र के अन्दर जिस प्रकार युवा पीढ़ी नशे की दलदल में धंस रही है, वह सबके लिए चिन्ता का विषय है। पंजाब तो नशे के कारण बहुत बदनाम हो रहा है। इस नशे के कारण पंजाब का भविष्य बर्बाद हो रहा है। युवा पीढ़ी जिसके ऊपर राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है अगर वही युवा पीढ़ी नशे की दलदल में धंस जाए तो उस राष्ट्र की क्या दशा होगी, उसका अनुमान आप स्वयं लगा सकते हैं। आज के युवा वर्ग को कैसे नशे से मुक्त किया जाए? इस पर सबको विचार करना है। क्या सरकार द्वारा खोले गए नशा मुक्ति केन्द्रों से नशा छूट जाएगा? क्या बलपूर्वक युवकों से नशा छुड़ाया जा सकता है? इन सभी विषयों पर विचार विमर्श करने की आवश्यकता है। आज की युवा पीढ़ी के लिए हमें ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए जिससे उन्हें राष्ट्र के प्रति, परिवार के प्रति अपने भविष्य के प्रति जागरूक किया जा सके। नशा मुक्ति केन्द्रों के द्वारा तब तक युवा पीढ़ी को नशे से मुक्त नहीं किया जा सकता जब तक उनके अन्दर स्वयं छोड़ने की भावना न हो। राजनीतिक पार्टियां नशे जैसे गम्भीर मुद्दे पर चिन्तन करने के बजाय राजनीति करने लगती है और एक दूसरे के ऊपर दोषारोपण लगाती हैं। इस गम्भीर मुद्दे पर राजनीति करने के बजाय सभी राजनीतिक पार्टियां एकजुट होकर कोई समाधान निकाले तो अवश्य सुधार हो सकता है। इस गम्भीर मुद्दे पर व्यक्तिगत स्वार्थ को त्यागकर राष्ट्रहित को सामने रखना चाहिए। नशे जैसी गम्भीर समस्या पर सारा समाज, सभी राजनीतिक दल, समाजसेवी संस्थाएं एकजुट होकर कार्य करें तो इस समस्या से छुटकारा मिल सकता है। नशा नाश का दूसरा नाम है। नशे में व्यक्ति की सोचने विचारने की शक्ति नष्ट हो जाती है। उसे नैतिक, अनैतिक में कोई भेद नजर नहीं आता। नशे में वह कोई भी कुकृत्य करने से घबराता नहीं है। मानवता का नाश करने वाले इस नशे को जड़ से खत्म करने के लिए सभी को एकजुट होना होगा। अगर प्रत्येक व्यक्ति अपना, अपने परिवार का सुधार कर लें तो राष्ट्र का अपने आप सुधार हो जाएगा। आज की युवा पीढ़ी के भटकने का कारण यही है कि उन्हें अच्छे संस्कार नहीं मिल रहे हैं। घर में, स्कूलों में, कॉलेजों में जहां पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है, उसके नव जीवन का निर्माण होता है वहां पर उन्हें उस प्रकार की शिक्षा नहीं मिल पा रही है जिससे वे चरित्रवान् बन सकें। नशा व्यक्ति की विवेकशीलता को खत्म कर देता है। विवेक के समाप्त होने पर मनुष्य और पशु में कोई फर्क नहीं रह जाता है।

आज राष्ट्र का गौरव बढ़े, इसके लिए हमें युवकों को नशामुक्त और चरित्रवान बनाना होगा। युवकों के चरित्र को गौरवमय बनाने के लिए उनके चरित्र में भारतीय संस्कृति का दिव्य प्रकाश होना चाहिए। आज प्रत्येक राजनैतिक दल नवयुवकों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए हर प्रकार के हथकण्ड़े अपनाते हैं और आज का युवा मानस दिशा भ्रमित होकर उनके इशारों पर बन्दर की तरह नाच रहा है। राजनैतिक दल तो केवल अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए युवकों का उपयोग करता है। इस प्रकार की राजनीति के हाथ में युवकों का भविष्य अन्धकारमय बनता जा रहा है। आज इन दिग् भ्रमित युवकों को दिशा निर्देशन की जरूरत है। इस दिशा निर्देशन के पीछे राष्ट्र भक्ति विवेक शीलता, अपनी संस्कृति के प्रति गौरव की भावना का उद्देश्य निहित होना चाहिए। तब तक नशामुक्ति केन्द्रों से नशे को समाप्त नहीं किया जा सकता जब तक उनके अन्दर विवेक की, राष्ट्रभक्ति की भावना स्वयं पैदा न हो। इसलिए राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि इस गम्भीर समस्या पर विचार करके इस का समाधान अवश्य निकालें ताकि राष्ट्र के भविष्य को बर्बाद होने से बचाया जा सके और युवा वर्ग की ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों मे लगाया जा सके। **-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री**

thearyasamaj.org

सर्वश्रेष्ठ औषधि है गायत्री मंत्र

-ले० श्रीमती सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात।।

इस गायत्री मन्त्र के गर्भ में आध्यात्मिक एवं भौतिक सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान सन्निहित हैं। इस महामन्त्र के माध्यम से मनुष्य उन सभी वस्तुओं को सहज ढंग से प्राप्त कर सकता है जो अभीष्ट है।

गायत्री महामंत्र में चौबीस अक्षर होते हैं। उसके एक-एक अक्षर में दार्शनिक तत्वज्ञान विद्यमान हैं।

गायत्री को वेदमाता भी कहते हैं। गायत्री से ही चारों वेद और ऋचाएं निकली हैं। वेद समस्त विद्याओं का भण्डार हैं। समस्त तत्वज्ञान एवं भौतिक विज्ञान वेदों के अन्तर्गत समाहित है। अतः जो कुछ भी वेदों में है उसका सार गायत्री मंत्र है। जिसके सभी चौबीस अक्षर-ज्ञान विज्ञान के चौबीस समुद्र हैं।

जीवन धारण करने वाला जो तत्व है, वह प्राण कहलाता है। इसी प्राण के कारण हम जीवित हैं और जो हमारे प्राणों की रक्षा करती है, वह गायत्री है।

गायत्री उस बुद्धि का नाम है, जिसकी प्रेरणा से मनुष्य का मस्तिष्क एवं शरीर ऐसे मार्ग पर होता है जिस पर चलते हुए पग-पग पर कल्याण के दर्शन होते हैं और जिसके हर कदम पर आनन्द का संचार होता है। जिस विवेक बुद्धि और प्रज्ञा से तत्व की वास्तविकता को जाना जा सकता है, वही गायत्री है, जिसकी प्रेरणा से ही सात्विक विचार और कार्यों से मनुष्य की प्रत्येक शक्ति की रक्षा एवं वृद्धि होती है।

गायत्री महामंत्र के प्रत्येक अक्षर का अपना-अपना एवं अलग-अलग महत्त्व है-

ओ३म्-ब्रह्म, भूः-प्राणस्वरूप, भुवः-दुःखनाशक, स्वः सुखस्वरूप तत-उस, सवितु-प्रकाशवान या तेजस्वी, वरेण्य-श्रेष्ठ, भर्ग-पापनाशक, देवस्य-दिव्य को, देने वाले को, धीमहि-धारण करे, धियो-बुद्धि, यो-जो, नः-हमारी, प्रचोदयात्-प्रेरित करे।

अर्थात् उस सुखस्वरूप दुःखनाशक, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, प्राणस्वरूप ब्रह्म को हम धारण करते हैं जो हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करता है।

गायत्री महामन्त्र के इस अर्थ पर विचार करने से उसके अन्तर्गत तीन तथ्य प्रकट होते हैं-

1. ईश्वर के दिव्य गुणों का चिन्तन

2. ईश्वर को अपने में धारण करना।

3. सद्बुद्धि की प्रेरणा के लिए प्रार्थना और ये तीनों तत्व महत्त्वपूर्ण हैं।

गायत्री महामंत्र के प्रथम भाग में ईश्वर के गुणों का चिन्तन है। दुःख का नाश, श्रेष्ठता, तेज एवं आत्मा सर्वव्यापकता-इन सभी ईश्वर के गुणों का चिन्तन यदि गहरी अनुभूति और श्रद्धापूर्वक किया जाए तो आत्मा दिव्य भाव से ओत-प्रोत हो जाती है।

गायत्री महामंत्र के दूसरे भाग में उपरोक्त गुणों वाले तेजपुंज रूपी दिव्य गुण सम्पन्न परमात्मा को अपने में धारण करने की प्रतिज्ञा है। उसे अपने रोम-रोम में ओत-प्रोत कर लें। परमात्मा को अपने कण-कण में व्याप्त देखें और ऐसा अनुभव करें कि उन दिव्य गुणों में उस ईश्वरीय रूप में आत्मा अहं पूर्णरूपेण निमग्न हो जाए।

गायत्री महामंत्र के तीसरे भाग में परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि हमारे लिए सद्बुद्धि को प्रेरित करें और हमें सात्विक बुद्धि प्रदान करें। हमारे मस्तिष्क को कुविचारों, कुसंस्कारों, नीच वासनाओं एवं भावनाओं से छुड़ाकर सतोगुणी बुद्धि, विवेक से, सद्ज्ञान से पूर्ण करें।

वेदों में ज्ञान, कर्म और उपासना यह तीन विषय हैं। गायत्री के गर्भ में यही तीन विषय सन्निहित हैं। इस तथ्य को सच्चे हृदय से निष्ठा से और श्रद्धा के साथ अन्तःकरण में गहराई से उतारने का प्रयास करना ही गायत्री महामंत्र द्वारा गायत्री की उपासना है। यह शाश्वत सत्य है कि गायत्री की इस उपासना से ही साधक का सब प्रकार सुधार संभव है। सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक औषधि है गायत्री महामंत्र।

"वेद मंत्रों का हमारे जीवन पर प्रभाव क्यों नहीं पड़ता ?"

हम सुनते और पढ़ते तो हैं, परन्तु मनन, चिन्तन व ध्यान नहीं करते। यही कारण है कि हमारी रूचि नहीं बनती। जब तक किसी वस्तु के गुण, लाभ मालूम न हो तब तक हमारा ध्यान उधर नहीं जाता।

हिन्दुओं के पांच ग प्रचलित हैं-

गाय, गंगा, गुरु, गीता और गायत्री। गायत्री मंत्र छन्द है, इसके गुरु विश्वामित्र और देवता सविता है। इस मंत्र में 24 अक्षर हैं। इसके जाप से 24 नाड़ियां झंकरित होते हैं और 24 रोग निवारण होते हैं।

यह मंत्र मन का यन्त्र है। इससे कई प्रकार की चमत्कारी शक्तियां प्राप्त होती हैं। जैसे बूस्टर से कई मंजिल जल ऊपर चढ़ जाता है। इसी प्रकार गायत्री रूपी मंत्र की लिफ्ट में बैठने से प्रभु का गिफ्ट प्राप्त होता है। यह मंत्र अमोध ब्रह्म यन्त्र है, जो जन्म मरण के बंधन से छुड़ा देता है। यह कल्पवृक्ष व कामधेनु के समान है इससे हमारी सभी सुकामनाएं पूर्ण होती हैं। यह मंत्र सम्मोहक मंत्र है। प्रभु के Tel. की तारें सारे संसार में फैली हुई है कभी भी Engaged नहीं होती। भक्त भगवान से भक्ति की बातें करें और अपने दुखड़े प्रभु के आगे रोये, वही हमारे कष्टों का निवारण करने वाला है। दुःखों को दूर करने वाला केवल एक सहारा ओ३म् का है।

"जब तुम्हें मिले न कोई ठिकाना
तो प्रभु की शरण में आ जाना।"

गायत्री मन्त्र-उच्च कोटि का आध्यात्मिक विज्ञान

वेद उद्यान है, गीता गुलदस्ता है और गायत्रीः-सुमन। चारों वेदों में इसका वर्णन आया है।

गायत्री यज्ञ में आहुतियां डालनी हो तो गायत्री मंत्र एक सांस में बोल कर डालो। यह गायन विद्या भी है। सामवेद में इसका बहुत सुन्दर वर्णन आया है। गुणों के अनुसार इसके कई नाम हैं-गायत्री, सावित्री, पतित पावनि, दुःख भन्जनि, सविता, गुरुमंत्र व वेद मुख आदि।

सूर्य का प्रकाश बाहर का अन्धकार दूर करता है परन्तु गायत्री भीतर के अन्धकार, अज्ञानता, अन्ध विश्वास, कुरीतियां, यन्त्र, मंत्र, तन्त्र, भय, भ्रम आदि सब दूर करती हैं। इसके द्वारा हृदय पटल पर जो जन्म जन्मान्तरों की मैल जमी हुई है। वह छिन्न-भिन्न हो जाती है, जैसे आकाश में जब बिजली चमकती है तो बादल छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। हमारा अन्तरात्मा शुद्ध, पवित्र और निर्मल हो जाता है।

इस आध्यात्मिक क्षेत्र में जितना नीचे उतर जाएं तो चमत्कारी ऋद्धियां-सिद्धियां प्राप्त होती है। गायत्री माता हमारे हर असम्भव कार्यों को सम्भव कर देती है। जैसे-असाध्य से असाध्य रोगी, मृत्यु शय्या पर पड़ा रोगी महा मृत्युन्जय मंत्र का जाप रीति, नीति व विधि के साथ करने से खड़ा हो जाता है।

गायत्री के जाप से हमारे भीतर उत्साह, उल्लास, उत्कठां, उत्सुकता व उमंग उमड़ती है। हम देखते हैं कि जब जंगल में अचानक आग अपने आप लग जाती है तो हिंसक पशु भाग जाते हैं। इसी प्रकार गायत्री के जाप से हमारे अन्दर जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष आदि हैं वो स्वतः नष्ट हो जाते हैं और हमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। सांसारिक कामनाएं सीमित हो जाती हैं। हमारा आचार, विचार और व्यवहार सुन्दर बन जाता है। फिर हमारी आत्मा चमचमाते चांद की तरह और खिलखिलाते फूल की तरह बन जाती है।

हमारे भीतर ज्ञान के फुहारे, ज्ञान के सागर लहलहाने लगते हैं। प्रभु भक्ति की ज्योति की एक किरण, कृपा का एक क्षण प्राप्त हो जाता है। सम्पूर्ण जीवन ज्योतिर्मय बन जाता है। ओ३म् का ध्यान, गायत्री का जाप, यज्ञ का अनुष्ठान और वेदों के ज्ञान से उत्तम सन्तान की प्राप्ति होती है।

गायत्री मंत्र गागर में सागर है

सोने पर सुहागे का काम करता है, बुद्धि में निखार आता है संजीवनी बूटी है, अमृत की प्याली है, Light House है, कवच है, हंस के समान है।

गायत्री जाप करने वाले का मन सदा शान्त रहता है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

आज हमारी असली शादी हुई है

-ले० खुशहाल चन्द्र आर्य गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मा गांधी रोड कोलकत्ता

यह शब्द हैं एक महान् क्रान्तिकारी भगवती चरण बोहरा की धर्मपत्नी दुर्गा भाभी जिस समय अमर शहीद भगत सिंह की धर्मपत्नी बनकर अपने बेटे शचीन्द्र को गोद में लेकर लाहौर से कलकत्ता सकुशल पहुंची थी, तब भगवती चरण वोहरा ने प्रसन्न होकर अपनी धर्मपत्नी की पीठ ठोकते हुए कहा था कि आज हमारी असली शादी हुई है। घटनाक्रम इसी भांति है-

भारत के इतिहास में एक परिवार के दो या तीन भाई एक साथ देश के लिए बलिदान हुए हैं, ऐसी तो कई घटनाएं हैं, जिनमें चापेकर परिवार के तीन बन्धु जिनके नाम दामोदर चापेकर, बालकृष्ण चापेकर व वासुदेव चापेकर था तथा सावरकर परिवार के तीन भाई जिनके नाम गणेश पन्त सावरकर, विनायक सावरकर व नारायण सावरकर था, देश के लिए बलिदान होने में प्रमुख हैं। परन्तु किसी एक पति-पत्नी में क्रान्तिकारी के रूप में अपना पूरा जीवन देश की बलिवेदी पर अर्पित कर दिया हो, ऐसा उदाहरण केवल भगवती चरण वोहरा और दुर्गा भाभी का ही मिलता है। ये केवल क्रान्तिकारी ही नहीं थे, बल्कि इनका जीवन लोकेषणा, वित्तैषणा और पुत्रैषणा इन तीनों से ऊपर उठकर एक सन्यासी के रूप में था, इनका अपना कुछ भी नहीं था। तन, मन, धन तथा यौवन सब कुछ देश के लिए था।

दुर्गा भाभी के वंशज कौशाम्बी जनपद में रहते थे तथा यहीं पर श्री बांके बिहारी भट्ट जी की पहली पत्नी को इस वीरांगना की मां बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसका जन्म 7 अक्तूबर, 1907 को प्रातःकाल हुआ। यह दुर्गा पूजा का समय था इसलिए पुत्री का नाम दुर्गा ही रख दिया गया। पिता ने दूसरी शादी कर ली। सौतेली मां का व्यवहार दुर्गा के साथ अच्छा नहीं था। इसी कारण सम्भवतः बचपन से ही ये विद्रोही स्वभाव की बन गई। इनका पालन पोषण इसकी बुआ कृष्णा ने किया। इसका विवाह मात्र ग्यारह वर्ष की आयु में क्रान्तिकारी भगवती चरण बोहरा के साथ हो गया। बोहरा जी के पिता शिव चरण जी थे, जो रेलवे कार्यालय में ऊंचे पद पर लाहौर में कार्यरत थे। इनकी शिक्षा लाहौर के नेशनल कॉलेज में हुई। वहीं इनकी मित्रता कई क्रान्तिकारियों से हो गई। 27 जुलाई, 1920 में जब वोहरा जी के पिता का देहान्त हो गया तब वे खुलकर भारत को स्वतन्त्र कराने के अभियान में क्रान्तिकारियों के साथ जुड़ गए। अंग्रेजों से परेशान होकर दुर्गा भाभी अपने पति के साथ छुपकर अपनी जन्म स्थली कौशाम्बी जनपद में शहजादपुर अपने मायके कृष्णा बुआ के पास आ गई। दो महीने ससुराल में रहकर भगवती चरण वहीं से क्रान्तिकारियों का उत्साहवर्द्धक करते रहे। फिर 26 सितम्बर 1920 को वे पत्नी रहित लाहौर चले आए। यहां पर दुर्गा जी दसवीं की परीक्षा पास करके एक निजी विद्यालय में शिक्षिका बन गई। साथ ही संस्कृत सीखने के लिए टयूशन भी रख लिया तथा क्रान्तिकारी गतिविधियों में भी भाग लेती रही। लाहौर उन दिनों क्रान्तिकारियों का गढ़ माना जाता था। यहां पर उनका सम्पर्क भाई परमानन्द, लाला लाजपत राय आदि से हो गया एवं भगत सिंह, सुखदेव व यशपाल आदि क्रान्तिकारियों से भी घनिष्ठता और अधिक बढ़ गई। लाहौर में ''नौजवान भारत सभा'' का गठन किया गया। यह मुख्य रूप से छात्र युवकों का संगठन था तथा इसकी स्थापना भगवती चरण वोहरा और भगत सिंह ने की थी। दुर्गा भाभी सभा का काम करने के लिए स्वेच्छा से समर्पित हो गई। जब लाहौर में क्रान्तिकारियों के गुप्त अड्डों पर क्रान्तिकारियों की अंग्रेज़ों के विरुद्ध योजनाएं बनती थी तो दुर्गा भाभी क्रान्तिकारियों के संकेत पर गुप्त रूप से सन्देश व शस्त्र इधर से उधर पहुंचाने का काम करती थी। भगवती चरण वोहरा क्रान्तिकारियों में सबसे बड़े थे, इसलिए सभी दुर्गा जी को भाभी कहकर प्रेम से सम्बोधित करते थे। इस प्रकार वे क्रान्तिकारियों की प्रिय भाभी बन गई। हालांकि इनके पेट जब शचीन्द्र पल रहा था तो एक बार ये पुनः शहजादपुर आ गई मगर अंग्रेज़ पुलिस ने यहां भी उनका पीछा नहीं छोड़ा तब दुर्गा जी को पड़ोस के कन्हैया लाल अग्रवाल के घर छिपाया गया जहां उन्होंने बच्चे को जन्म दिया। सरकार ने जब इनका पीछा नहीं छोड़ा तो ये पुनः लाहौर आ गई और क्रान्तिकारियों की सहायता के लिए समर्पित हो गई। अपने नन्हें से शिशु को गोद में लिए पुलिस से छुपते-छिपाते पूरी तरह क्रान्तिकारी गतिविधियों में सक्रिय बनी रही।

8 अप्रैल, 1927 को दिल्ली असैम्बली में दमनकारी ''पब्लिक सेफ्टी'' बिल प्रस्तुत करते समय भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने ''इन्कलाब जिन्दाबाद'' व ''साम्राज्यवाद का नाश हो'' के नारे लगाकर वहीं पर बम फेंके तथा ये दोनों जान बूझ कर वहीं पर गिरफ्तार भी हो गए। उन्हें जेल जाते समय पुलिस से छुड़ाने के लिए चन्द्रशेखर आजाद, भगवती चरण बोहरा, यशपाल, धन्वन्तरी, वैशम्पायन ने बम फोड़ कर आतंकित करने की योजना बनाई, पर सफल न हो सकी।

28 दिसम्बर, 1928 को लाला लाजपतराय की शहादत का बदला लेने के लिए चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह तथा राजगुरु ने लाहौर के बाजार में साण्डर्स को गोलियों से भून दिया। जब साण्डर्स को गोलियां मारी गई थी, तब दुर्गा भाभी कमरे में संस्कृत का अध्ययन कर रही थी। अंग्रेजी सिपाहियों की नज़र से क्रान्तिकारियों को लाहौर से सुरक्षित निकाल ले जाना उस समय एक टेढ़ी खीर थी। रात के ग्यारह बजे अचानक सुखदेव ने दरवाजा खटखटाया और जब पूरी बात भाभी जी को बताई तो वह ज़रा सी भी नहीं घबराई बल्कि तुरन्त सुखदेव को पांच सौ रुपए दिए और यहीं नहीं एक योजना के तहत उस रूढ़िग्रस्त युग में भी भगत सिंह की पत्नी बनकर और अढ़ाई वर्ष के अपने बेटे शचीन्द्र को गोद में लेकर अगले दिन ही प्रातःकाल की रेल से कलकत्ता के लिए रवाना हो गई। उस समय इस वीरांगना की आयु मात्र बाईस वर्ष की थी। भगत सिंह अंग्रेज़ी पोशाक में हेट लगाए हुए थे तथा सुखदेव इस तथाकथित दम्पत्ति के नौकर के रूप में चल रहे थे। रेल के उसी डिब्बे में रामनामी चद्दर ओढ़े हुए चन्द्रशेखर आजाद भी पहले से ही मौजूद थे। चन्द्रशेखर आजाद तो पूर्व योजना के अनुसार बड़ी चतुराई से मथुरा में उतर गए, मगर दुर्गा भाभी ने समूचे अंग्रेज़ी प्रशासन की आंखों में धूल झोंक कर क्रान्तिकारियों को कलकत्ता में सुरक्षित पहुंचा दिया। इस साहसिक कार्य से भाभी जी का आत्म विश्वास बहुत अधिक बढ़ गया तथा वह क्रान्तिकारियों के हृदय में बस गई। कलकत्ता स्टेशन पर उनके पति बोहरा जी इतने अधिक प्रसन्न हुए कि इन्होंने अपनी पत्नी की पीठ ठोकते हुए कहा कि ''आज हमारी असली शादी हुई है।''

मेरा इस लेख के लिखने का अभिप्राय यही है कि आज के नवयुवक पश्चिमी सभ्यता की ओर बड़ी तेज़ी से भाग रहे हैं। इनको केवल दो-चार क्रान्तिकारियों जैसे सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिला, राजगुरु, सुखदेव आदि के नाम तो याद हैं। बाकी इनसे कुछ कम या अधिक सैंकड़ों नहीं सहस्त्रों क्रान्तिकारी भाईयों और बहनों ने अपना जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित किया है, उनको भी हमारे नवयुवक याद करें। इस भावना से यह इतिहास की एक प्रमुख घटना लिखी है जिसको पढ़कर नवयुवकों में बाकी और क्रान्तिकारियों की जीवनी पढ़ने की रूचि बढ़े। आशा है कि मेरा उद्देश्य आवश्य सफल होगा। मुझे प्रसन्नता है कि आर्य समाजियों ने जहां क्रान्तिकारी कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया वहीं आर्य समाज के मन्दिर भी क्रान्तिकारियों के आश्रय स्थल रहे हैं। इसी शृंखला में मुझे गर्व है कि अमर शहीद भगत सिंह इसी यात्रा के दौरान आर्य समाज कलकत्ता में भी कुछ दिन ठहरे थे और अपनी यादगार के लिए एक लोटा और एक थाली भी आर्य समाज कलकत्ता को दे गए थे जो अभी भी सुरक्षित है। मैंने इस लेख को लिखने में क्रान्ति के अग्रदूत पुस्तक जो आदरणीय आचार्य भगवान देव ''चैतन्य'' द्वारा लिखित है उससे काफी सहयोग लिया है, ''चैतन्य'' जी का भी मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं।

thearyasamaj.org

आओ, सोम-सरोवर के भक्ति रस-जल में स्नान कर आनन्दित हो

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

सामवेद उपासना तथा ईश्वर की स्तुति-गान का वेद है। उपासना ईश्वर के पास बैठकर आनन्द में सरोवर होना है। इसे सोम सरोवर का स्नान भी कह सकते हैं। पंडित चमूपति महर्षि दयानन्द के आदर्श अनुयायी थे। वह उर्दू, अरबी, फारसी व अंग्रेज़ी के विद्वान् होने के साथ संस्कृत व हिन्दी के भी विद्वान थे। आपने अनेक भाषाओं में रचनाएं की हैं। आपकी अनेक प्रसिद्ध रचनाओं में से एक है सोम सरोवर। इस पुस्तक में आपने सामवेद के पवमान सूक्त के मन्त्रों की भक्ति रस में डूब कर व्याख्या की है जो हृदय को झंकृत कर उसमें आस्तिक भाव को उत्पन्न करती है और जीवात्मा-पुरुष आनन्द रस में भरकर हरा-भरा हो जाता है। आर्यसमाज के एक दूरदर्शी नेता पत्रकार शिरोमणि महाशय कृष्ण की 'सोम सरोवर' के सम्बन्ध में यह सम्मति थी कि यह विश्व के सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थों में से एक है। जिन साहित्यिक ग्रन्थों पर साहित्य का नोबेल पुरस्कार दिया जा चुका है, सोम सरोवर ऐसे कई ग्रन्थों से कहीं ऊंचा व श्रेष्ठ है। सोम-सरोवर पुस्तक का महत्त्व बताते हुए प्रसिद्ध लेखक व विद्वान राजेन्द्र जिज्ञासु ने लिखा है कि हिन्दी के साहित्यकार, प्राध्यापक व प्रेमी यह जान लें कि हिन्दी साहित्य में इस कोटि की दूसरी पुस्तक अब तक तो लिखी नहीं गई। यदि कोई है तो वह पंडित चमूपति कृत जीवन-ज्योति है। आइए इस पुस्तक सोम-सरोवर से दो मन्त्रों का पाठ व उसकी व्याख्या पढ़कर सरोवर में मन्त्र है-यस्ते मदो वरेण्यस्तेनापवस्वान्धसा। देवावीरघशंसहा।। लेखक ने इस मन्त्र का शीर्षक पाप-नाशक नशा दिया है। मन्त्र का ऋषि है 'अमहीयुः' अर्थात् एक ऐसा मनीषी जो पृथिवी की नहीं, आकाश से भी ऊपर द्युलोक की उड़ान लेने वाला। पहले इस मन्त्र के पदों व शब्दों के अर्थ जान लेते हैं। (ते) तेरा (यः) जो (वरेण्यः) ग्रहण करने लायक (मदः) नशा है (तेन) उस (अन्धसा) प्राणप्रद संजीवन-रस से (आपवस्व) चारों ओर पवित्रता का प्रवाह चला। तू (देवावीः) दिव्य भावनाओं तथा दिव्य प्रजाओं का रक्षक तथा (अघशंसहा) पाप की प्रशासा का घातक है। पुट हैं। वे हिंसा से पैदा होते हैं। उनके खमीर में पाप है। वे पाप ही की उपज हैं और पाप ही की प्रेरणा करते हैं। परन्तु मोहन। तेरे प्रेम का नशा प्राणपद अन्य सब नशे छोड़ देने चाहिए। वे मैले हैं, अपवित्र हैं। उन में पाप का नशा है। इससे स्वास्थ्य बढ़ता है। इसके पान से शरीर नया जीवन-लाभ करता है। और मन की तो काया-पलट सी हो जाती है। यह नशा देवताओं के लिए यह नशा अमृत है। दैवी प्रवृत्तियां सो रही हों तो इस नशे का ध्यान आते ही जाग जाती हैं, झूमने लगती हैं। भली भावना किसी संकट के कारण मृतप्राय हो तो केवल जी ही नहीं, लहलहा उठती है। प्रभु के स्नेह का नशा सत्य की, सरलता की, सन्तोष की, सदाचार की रक्षा करता है। लाख आपत्तियां आती हों, प्रभु का स्नेही धर्म के रास्ते से नहीं हटता। धर्म के लिए संकट सहने में उसे आनन्द आता है। पाप की मोहिनी प्रभु के स्नेह के सम्मुख एक क्षण के लिए भी नहीं ठहर सकती।

हमारा मन भटक जाता है। उसकी रूचि पाप की ओर हो जाती है। कोई अन्दर-अन्दर से मानो दबी सी आवाज़ में पाप की प्रशंसा करने लगता है। दिल कहता है-पाप है तो क्या, इससे लाभ ही होगा, झूठ बोल दो, इससे एक अपना ही नहीं सम्पूर्ण जाति का लाभ है। परोपकारार्थ छल करने से क्या दोष है ? इस प्रकार के कितने छल हैं जो मेरा छली मन रोज करता रहता है।

प्रभो! आप की आंख बचा कर तो यह छल चल भी जाए, परन्तु आपके सामने आते ही यह मोह-अज्ञान का ताना-बाना, छिन्न-भिन्न हो जाता है। आप की एक कृपा कोर लाख पापों का बंटाधार कर देती है। तो फिर वह आपकी कृपा-कोर कहां है ? मेरे लिए वही सोम है। मैं उसी का प्यासा हूं। एक प्याली। एक घूंट!! एक बूंद!!!

हम आशा करते हैं कि उक्त मन्त्र की व्याख्या से पाठक आनन्दित एवं भाव-विभोर हुए होंगे। एक अन्य मन्त्र की व्याख्या और प्रस्तुत कर रहे हैं। इस मन्त्र का शीर्षक है-'इन्द्र की अर्चना।' मन्त्र प्रस्तुत है-'इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः। अर्कस्य योनिमासदम्।।' मन्त्रार्थः (इन्दो) ऐ जगत् को सरसाने वाले स्नेह-रस के सुधाकर मुझ (मरुत्वते) प्राणों वाले (इन्द्राय) मुझ इन्द्रियों वाले देहधारी के लिए (मधुमत्तमः) अत्यन्त मधुर होकर (पवस्व) पवित्रता का प्रवाह चला। मैं (अर्कस्य) अर्चना के (योनिम्) मन्दिर मेरे प्राण प्रबल हैं। शरीर स्वस्थ हैं। अंग-अंग में स्फूर्ति हैं। निठल्ला बैठने को जी नहीं चाहता। दसों इन्दियां शक्तिशाली हैं।

यह सब कुछ होते हुए भी जीवन नीरस है। स्वास्थ्य के साथ भी दिन बीत जाता है। रोग की अवस्था में भी ज्यों त्यों रात कट जाती है.

किसी ने कराह-कराह कर समय गुजार दिया, किसी ने हंस खेल कर दिन बिता दिए। स्मृति दोनों की नीरस है। मुझे शक्ति का अभिमान तो होता है, रस नहीं मिलता। गर्व से गर्दन उठा देता हूं और यह ऐंठ जाती है। पर ऐंठ में रस कहां ? रस तो लचक में है। हां लचक ही में जीवन है।

प्रभो! कोई लचकीला आनन्द। कोई स्थाई स्थिर रस। सुनता हूं, स्थिर रस तुम्हारी कृपा-कोरों में है। तुम्हारी कृपा-कोरों की चांदनी चांद के, तारों के प्रकाश के साथ-साथ जगत् को व्यास कर रही है। आकाश-गंगा प्रेम की गंगा बहाए जा रही है। मेरे हृदय चकोर के चांद। तुम्हारी स्निग्ध किरणों ने ही तो अपने स्नेह रस में सम्पूर्ण प्रकृति को गूंथ-गूंथ कर रसमय बना दिया है। तुम्हारा हृदय यदि आर्द्र न होता तो अणु-अणु पृथक भले ही रह जाता, पर इसमें तरी न आती। पिण्ड न बनते।

ब्रह्माण्डों की सृष्टि-संसृष्टि हे सृष्ट जगत् के संजीवन-रस। एक कृपा-कोर मेरी ओर भी। मैं अपने ताप का कारण समझ गया हूं। वह है तुम्हारी करुणा से विमुखता। मेरे पास स्वास्थ्य है, स्फूर्ति है, पर इन दोनों का हे प्राणों के प्राण! मेरे प्राणों को अपनी स्नेह-सुधा से अनुप्राणित कर दो। मेरे जीवन को अपनी संजीवनी से उज्जीवित कर दो। मेरी इन्द्रियां तुम्हारी अर्चना के फूल बन जाएं। मेरे प्राण तुम्हारी पूजा के नैवेद्य हों। आज मेरा नया जन्म हो। अर्चना के जीवन में झुक जाऊं, लचक जाऊं, तुम्हारे चरणों में तन, मन, धन सब अर्पण कर दूं। सफलता अर्पण में है। अर्चन में है। हम आशा करते हैं कि पंडित चमूपति जी की उपर्युक्त अर्चनाओं को पढ़कर पाठकों ने भक्ति के सोम-सरोवर में स्नान कर आनन्द का अनुभव अवश्य किया होगा। इस अर्पण व अर्चन को संजो कर रखिए, बहुत काम आएगा।

गुरू पूर्णिमा एवं गुरू विरजानन्द दिवस

आप सभी को सहर्ष सूचित किया जाता है कि आपके अपने गुरू विरजानन्द स्मारक गुरूकुल करतापुर में गुरू पूर्णिमा दिवस 01 अगस्त 2015 को बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर गुरूकुल के पूर्व छात्र तथा इस समय शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्र गुरूजनों के चरणों में अपने श्रद्धासुमन अर्पित करेंगे एवं हम सभी गुरूकुल को अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित करें जिससे वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में संलग्न यह संस्था प्रफुल्लित होती रहे। इस कार्यक्रम में प्रातः 7:00 से 8:15 तक यज्ञ होगा। यज्ञ के पश्चात प्रातराश होगा। गुरू पूर्णिमा का मुख्य कार्यक्रम 10:00 से 1:00 बजे तक होगा। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता महात्मा चैतन्यमुनि जी संरक्षक गुरूकुल करतारपुर करेंगे। मुख्य अतिथि श्री विजय सांपला जी सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मन्त्री भारत सरकार तथा मुख्य वक्ता डॉ. महावीर जी अग्रवाल कुलपति उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय होगें। विशेष अतिथि श्रीमती इन्दु पुरी जी मोगा तथा सारस्वत अतिथि श्री रामकृष्ण जी चुघ ऋषिकेष होंगे। इस अवसर पर भजन श्री सत्यपाल जी पथिक एवं गुरूकुल करतारपुर के ब्रह्मचारियों द्वारा गाए जाएंगे। कार्यक्रम के पश्चात भोजन की व्यवस्था भी रहेगी। दादा गुरू विरजानन्द जी के इस स्थान पर महर्षि दयानन्द जी की परम्परा का पालन करते हुए गुरू पूर्णिमा के कार्यक्रम में आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

महामन्त्री गुरूकुल करतारपुर

thearyasamaj.org

शोक सभा का आयोजन

श्री वेद प्रकाश जुनेजा जी (संरक्षक आर्य समाज) जिनका निधन अमेरिका में हो गया। उनकी आत्मिक शान्ति हेतु सायं 5 बजे हवन यज्ञ व प्रार्थना सभा का आयोजन प्रधान श्री सोहन लाल सेतिया जी की अध्यक्षता में किया गया। श्री अशोक शास्त्री जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। उसके बाद डा. श्री रणवीर प्रताप असीजा, श्री सुशील मेहता व श्रीमती रेणू घोडा ने श्री वेद प्रकाश जी के जीवन के बारे में बताया तथा श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर आर्य समाज के सभी सदस्य, बी. एल. वैदिक स्कूल व आर्य पुत्री पाठशाला का स्टाफ व शहर के अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए। बाद में सभी ने श्री वेद प्रकाश जी की आत्मिक शान्ति के लिए दो मिनट का मौन रखा। शान्ति पाठ के बाद शोक सभा का विसर्जन कर दिया सया।

-सुशील मेहता महामन्त्री

बुढ़ापे के रोग के उपचार व सरल चिकित्सा

1. 60 साल की उम्र में आंखों में मोतिया बिन्द आ जाते हैं अतः फोको प्रद्धति आपरेशन करा मणी (लेन्स) डलवाएं।

2. बुढ़ापे में कब्जीयात आम रोग है। अतः सनय पत्रो की कॉफी लें या अरण्डी का तेल सप्ताह में एक बार अवश्य पीएं पेट साफ़ा व साफ रहेगा।

3. अगर पायरस व मस्से हैं तो पाईलेक्स गोली लें या होमियोपैथिक दवा एन. वी. 30 रात में थिएक्युलस हिप 200 प्रातः लें।

4. प्रातः उठकर तांबे के लोटे का पानी पिएं। उन्हें कब्ज पाईलेस व एसिडिटी कभी नहीं होती। अगर श्वास की बिमारी शुरू हुई तो Ephedrim *या सुबाटोल की गोली प्रातः लेवे व कनसव दिन में तीन बार पिए।*

5. अगर हाई बी. पी. है तो नींबू व कालानमक डालकर पानी पिएं।

6. अगर शुगर का असर हैं तो नीम पत्र 5 खावे तथा दिन में गिलोय सत या बारामासी के फूल या डुंगमार के पत्ते चबावें।

7. अगर हाटे टूबल हैं तो अर्जूना रिस्ट दिन में तीन बार पिएं।

8. बुढ़ापे में कमर दर्द व घुटनों का दर्द आम बात है अतः रात को मैथी के दाने की एक फाकी (10 ग्राम) पानी में भिगो दें व प्रातः पानी पी व शेष मैथी खा लेवे तथा महायोग राज गुगल की 2-2 गोलियां दिन में 3 बार लेवे।

9. बुढ़ापे में प्रोस्टेट गलेएछ बढ़ जाती है सो चन्द्र प्रभा वटी तथा गोरवन चूर्ण की फाकी लेवे।

10. जीवन की शिथिलता ही बुढ़ापा है अतः आती हुई कमजोरी को रोकने के लिए (समर्थ हो तो बसन्त कुसुमार रस व मकर ध्वजवटी लेवे वरणा जेरी फोर्ट नियो या निरोबिन की 1-1 गोली दिन में 2 बार लेवे अन्य अस्तु शुभास्तु।

पृष्ठ 2 का शेष-कर्मफल सिद्धान्त....

एक धर्म ही इस प्रकार का मित्र है जो मृत्यु के बाद भी आपका साथ देता है अन्य सभी शरीर के साथ नष्ट हो जाते हैं।

एक एवं सुहृदयों निधनेऽप्य-नुयाति यः।

शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति।। मनु 8/17

इसी संदर्भ में यह भी कहना उचित होगा कि प्रायः हम सोचते हैं कि हमारे लिये कर्मों को कौन देखता है? दुनिया में असंख्य प्राणी हैं, हमारे कर्मों का कौन हिसाब किताब रखता है? यह विचार तो हमें डराने के लिये ही हैं। परन्तु इस शंका का समाधान अथर्ववेद का मंत्र करता है जिसका अर्थ कि जितनी बार मनुष्य की आंख झपकती है प्रभु के ज्ञान में उसका पूरा पूरा हिसाब है।

संख्याता अस्य निमिषो जनानाम् -अथर्व 4/16/5

अथर्ववेद तो यहां तक कहता है कि यदि किसी बन्द कमरे में दो व्यक्ति वार्तालाप कर रहे होते हैं और विचार करते हैं कि तीसरा यहां कोई नहीं जो उनकी बात को सुन रहा है तो वे निश्चय जाने कि वहां वरुण (न्याय का देवता) उपस्थित है।

यस्तिष्ठति चरति यश्चवञ्चति यो निलायं चरति।

द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद्वेद वरुणस्तृतीये प्रतकंम्।।

अन्त में मन्त्र कहता है कि वह पात्र अर्थात् वह कर्म जो अपने किये हैं, उनका फल अथवा परिणाम सुरक्षित है उसमें कोई परिवर्तन संभव नहीं। न उस परिणाम में कुछ घटाया जा सकता है और न ही बढ़ाया जा सकता है। जैसा आप ने पकाया था वैसा ही पका पकाया आप को प्राप्त हो जायेगा। अर्थात् जैसे बीज बोए थे फल तो उसी के ही अनुरूप होंगे। अच्छे कर्मों का फल अच्छा, बुरे कर्मों का बुरा। इसलिये परमात्मा से यही प्रार्थना है करनी चाहिये कि हमें सुमार्ग पर चलने की प्रेरणा दें ताकि हमारी जीवन यात्रा सुकर्मों वाली हो।

पृष्ठ 4 का शेष- सर्वश्रेष्ठ औषधि.....

मान सरोवर की तरह झूमने लगता है और चांद की किरणों की तरह शीतलता अनुभव करता है। उसके पाप व ताप धुल जाते हैं और वह देवता के समान बन जाता है। उस पर प्रभु का सच्चा, सुच्चा रंग चढ़ जाता है, विवेक और वैराग्य बढ़ जाता है।

जाप की विधि

एकान्त, शान्त, एकाग्र चित्त होकर जाप करो तो शान्ति प्राप्त होगी। जैसे सूई में धागा डालने के लिए एकाग्रता चाहिए, सूक्ष्म वस्तु को उठाने के लिए सूक्ष्म यन्त्र की आवश्यकता होती है प्रभु तो सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है उसे सूक्ष्म दृष्टि से प्राप्त किया जा सकता है। जब हमारी दृष्टि सूक्ष्म बन जाती है तो आसन लगाते ही सहज समाधि लग जाती है।

कान बन्द करते ही अनहद नाद सुनाई देता है, मुख बन्द करते ही अजपा जाप चल पड़ता है। फिर हृदय पर अमिट छाप पड़ जाती है। जैसी मती होती है वैसी गति होती है।

''करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान, रसरी आवत जात है सिल पर पड़त निसान।''

मन रूपी मन्दिर की झील में बार-बार डुबकी लगाओ जो बड़ी सुन्दर, सुहानी और शीतल है। फिर हमें प्रभु के चमत्कार दृष्टिगोचर होते हैं।

''प्रभु शरण आनन्द का ले आनन्द अपार, प्रभु शरण आनन्द की महिमा अपरम्पार' अजपा जापकी हृदय पर अमित छाप पड़ जाती है। चलते फिरते, खाते पीते स्वत: माला चलती रहती है। फिर काठ की माला की आवश्यकता नहीं रहती।''

लेखक और विद्वान् महानुभावों की सेवा में

आर्य जगत् के लेखक और विद्वान महानुभावों से निवेदन किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साप्ताहिक पत्र आर्य मर्यादा का श्रावणी तथा श्री कृष्णजन्माष्टमी का संयुक्त विशेषांक निकाला जा रहा है। इस विशेषांक के लिए आपके सारगर्भित व अप्रकाशित लेख सादर आमन्त्रित हैं। आप अपने लेख 10 अगस्त तक आर्य मर्यादा के कार्यालय गुरूदत्त भवन, गुरूदत्त रोड़ चौक किशनपुरा जालन्धर में भेजने की कृपा करें। समय पर प्राप्त होने वाले लेखों को आर्य मर्यादा विशेषांक में उचित स्थान दिया जाएगा।

-संपादक आर्य मर्यादा साप्ताहिक

thearyasamaj.org

वेदवाणी

आत्म-ज्योति को प्रकाशित कर दो

गूहता गुह्यं तमो वि यात विश्वमत्रिणम्।
ज्योतिष्कर्त्ता यदुश्मसि।।

-ऋ० १/८६/१०

ऋषि-राहूगणो गोतमः।। देवता-मरुतः।। छन्दः-गायत्री।।

विनय-हे मरुत देवो! हे प्राणो! हम अंधेरी गुफा में पड़े हुए हैं। चारों ओर अंधेरा-ही-अंधेरा है। इस अंधेरे में खा जाने वाले राक्षस हमें सता रहे हैं, हमें खाए जा रहे हैं उन्हें भगाओ। इन सब "अत्रियों" को हमसे दूर कर दो। हमें जो कुछ चाहिए वह प्रकाश है। हमें प्रकाश दो, इस गुफा में चारों ओर प्रकाश फैला दो।

मैं पंचकोशों की अंधेरी गुफा में रह रहा हूं-शरीर, प्राण, मन आदि के पांच शरीरों में बंद पड़ा हुआ हूं-अपने आपको भूल के इन शरीरों को आत्मा समझ रहा हूं। इसलिए काम, क्रोध, लोभ आदि राक्षस मुझे खाए जा रहे हैं। ये काम, क्रोध आदि अज्ञान में ही रह सकते हैं। आत्मान्धकार में ही ये फूलते-फलते हैं। इसलिए हे प्राणो! तुम मेरे गुहा के अन्धकार को विलीन कर दो। अन्धकार के हटने पर ये 'अत्रि' अपने-आप ही यहां से भाग जाएंगे। जब हममें आत्म-ज्योति फैल जाएगी, सब भूतों, सब प्राणियों में फिर आत्मा दिखाई देने लगेगा तो हम किसके प्रति क्रोध करेंगे ? जब हमारा प्रेम सर्वव्यापक हो जाएगा तो हम किस एक में कामासक्त होंगे ? लोभ किस लिए करेंगे ? ओह, आत्म-ज्योति का प्रकाश हो जाने पर ये क्षुद्र "अत्रि" कहां ठहर सकते हैं। आत्म-ज्योति वह ज्योति है जिससे सहस्त्रों सूर्य, चन्द्र और विद्युत् प्रकाशित हो रहे हैं, जिस परमोज्वल ज्योति के सामने हज़ारों सूर्यों की इकट्ठी ज्योति भी फीकी है-वह प्रकाश हमें दो। हम उस प्रकाश को पाने के लिए तड़प रहे हैं। उस प्रकाश के पा जाने पर तो सब कुछ हो जाएगा, हृदय का अन्धकार मिट जाएगा और इन खा जाने वालों से हमारी रक्षा हो जाएगी। हे प्राणो! तुम प्रकाश के लाने वाले हो। हम जानते हैं कि तुम्हारे जागने पर प्रकाशावरण का क्षय हो जाता है। इस सत्य में हमें विश्वास है। इसलिए हे प्राणो! हम तुमसे विनय कर रहे हैं। तुम हममें समाकर हमारे प्रकाश का द्वार खोल दो।

-वैदिक विनय से साभार

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

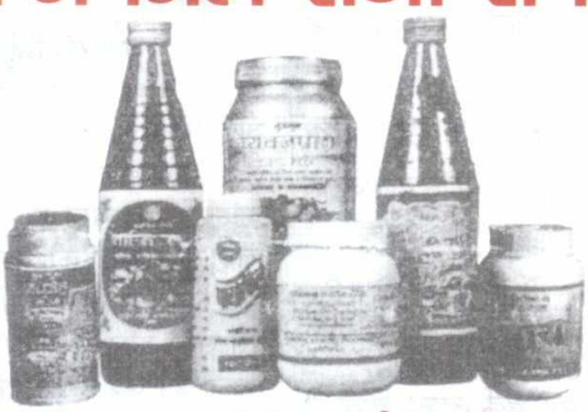

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।

thearyasamaj.org